Kubernath Ray

An eminent Scholar of Hindi and English and a great thinker, Shri Kubarnath Ray particularly distinguished himself in the field of writing essay in Hindi. He was born on 26th March 1933 in village Matsa of Zamania Tehsil in Ghazipur, Uttar Pradesh. He was the son of Smt. Lakshmi Devi and Shri Baikuntha Rai. His mother would say that children in general are born with their fists closed while her son was born with folded hands as if in prayer. He completed his primary, middle and high school education at Ghazipur. He did his Intermediate from Queen's College, Varanasi and Graduation from Banaras Hindu University with English, Philosphy and Mathematics as his subjects. He went on to do his post-graduation from Kolkata University in English Literature.

Kubernath Ray's creative writing primarily deals with general public life in Aryan and non-Aryan India, Gandhian philosophy, stories of Lord Rama and modern contemporary thinking. Personal essays are a fundamental feature of his writing. All the modes of literary writing such as poetry, story, novel, play, etc may be discovered in his writings. About his literary compositions, he used to say that they were an expression of his inner voice and promptings which were not forced or laboured. He would say that English was the language for his earning needs, Hindi was his natural language for prayer and devotion.

He served as a Lecturer and Head of English Department in Nalbari College, Nalbari & Guwahati University, Assam from 1959-1986. Later, he was the Principal of Swami Sahajan and P.G. College, Ghazipur (UP) during 1986-1995 from where he retired on 30th June 1995.

Some of his works are Priya Nilkanthi (published in 1969), Ras Aakhetak (1971), Gandhmaadan (1972), Nishad Bansuri (1973), Vishad Yoga (1974), Parn Mukut (1978), Mahakavi ki Tarjani (1979), Patr: Maniputul Ke Naam (1980), Man Pawan ki Nauka (1982), Kirat Nadi Me Chandramadhu (1979), Drishti Abhisar (1985), Treta ke Brihatsam (1986), Kaamdhenu (1990), Maraal (1993), Uttarkuru (1993), Cinmaya Bharata (1996). Kanthamani (Kavita) (1998), Vani ka Sheersagar (1998), Andhakar me Agnishikna (2008), Ramayana Mahatirtham (2008), Agam Ki Nav (2013), Kuber Nath Ray Ki Drishti Me Swami Sahajanand (2014) were works published after his death. Twenty research scholars have been awarded Ph.D. for their works on his books.

Kubernath Ray is known to have avoided stage garlanding, public meetings and specifically public speaking. He used to say that it affected his creative writing. Several words like Nishad, Kirat and some words taken from languages spoken in Southern States of India have been amalgamated by him into Sanskrit and Hindi vocabulary and these are found in his compositions as well.

Reacting to some criticism for use of difficult words in his writings, Ray responded by saying that every creative writer is a teacher, his duty is to enlarge the reader's range of knowledge. He believed that a true and keen reader would try to find out the meaning of unfamiliar words. Through his knowledge of English language, Ray became acquainted with the literature of several languages of the world. In addition to Hindi, which was his mother tongue, he knew Urdu, Arabic and Persian. He has a good command of Bengali language and was familiar with Greek and Roman languages and their literature also. He was well versed in Sanskrit, which is considered to be the mother of all Indian languages. He died on 5th June 1996.

Department of Post is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Kubernath Ray.

Credits:

Text : Based on information received from the proponent

Stamp/First Day Cover/Brochure/ Cancellation Cachet : Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts India

कुबेरनाथ राय
KUBERNATH RAY
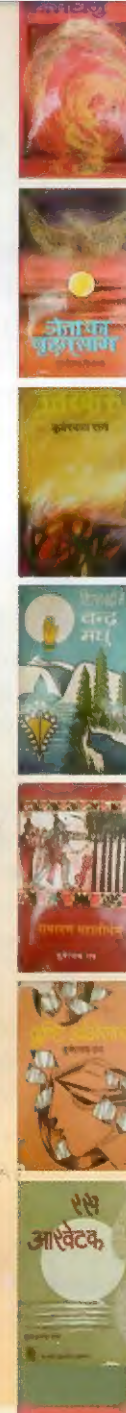
विवरणिका BROCHURE

कुबेरनाथ राय

हिन्दी और अंग्रेजी के प्रतिष्ठित अध्येता और महान चिन्तक, श्री कुबेरनाथ राय ने विशेष रूप से हिन्दी में निबंध लेखन के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त की। उनका जन्म 26 मार्च, 1933 को गाजीपुर में जमानिया तहसील के मतसा ग्राम में हुआ था। वे श्रीमती लक्ष्मी देवी और श्री बैकुण्ठ राय के पुत्र थे। उनकी माता कहती थीं कि सामान्यतः सभी बच्चे मुठ्ठी बांधे हुए पैदा होते हैं, जबकि उनके पुत्र ने जन्म के समय हाथ जोड़ रखे थे, जैसेकि वे प्रार्थना में हों। उन्होंने अपनी प्राथमिक, लघु माध्यमिक और हाई स्कूल की शिक्षा गाजीपुर में पूरी की। उन्होंने इन्टरमीडिएट की शिक्षा क्वींस कालेज, वाराणसी से और स्नातक की डिग्री अंग्रेजी, दर्शनशास्त्र और गणित विषयों के साथ बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से प्राप्त की। अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर की पढ़ाई करने के लिए वे कोलकाता विश्वविद्यालय गए।

कुबेरनाथ राय का सर्जनात्मक लेखन मुख्यतः आर्य और आर्येतर भारत में आम जनता के जीवन, गांधीवादी दर्शन, भगवान राम की कथाओं और आधुनिक समसामयिक चिन्तन से जुड़ा है। व्यक्तिगत निबंध उनके लेखन की एक मौलिक विशेषता है। साहित्यिक लेखन की सभी विधाएं जैसे काव्य, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि उनके लेखन में देखी जा सकती हैं। अपनी साहित्यिक रचनाओं के बारे में वे कहा करते थे कि ये उनकी अन्तरात्मा की आवाज और अनुबोधन की अभिव्यक्ति हैं, जिन्हें जबरदस्ती अथवा परिश्रम करके अभिव्यक्त नहीं किया गया है। उन्होंने कहा कि अंग्रेजी मेरी जीविका की भाषा है और हिन्दी मेरी उपासना और भक्ति की मातृभाषा है।

वे 1959 से 1986 तक नलबारी कॉलेज, नलबारी व गुवाहाटी विश्वविद्यालय, असम में अंग्रेजी विभाग के प्राध्यापक और विभागाध्यक्ष रहे। बाद में, 1986–1995 के दौरान वे स्वामी सहजानन्द पी. जी. कॉलेज, गाजीपुर (उत्तर प्रदेश) के प्राचार्य रहे और यहीं से 30 जून, 1995 को सेवामुक्त हुए।

उनकी कुछ कृतियां हैं – प्रिया नीलकंठी (1969 में प्रकाशित), रास आखेटक (1971), गंधमादन (1972), निषाद बांसुरी (1973), विषाद योग (1974), पर्ण मुकुट (1978), महाकवि की तर्जनी (1979), पत्रः मणिपुतुल के नाम (1980), मन पवन की नौका (1982), किरात नदी में चन्द्रमधु (1979), दृष्टि अभिसार (1985), त्रेता के बृहत्साम (1986), कामधेनु (1990), मराल (1993), उत्तरकुरू (1993), चिन्मय भारत (1996) । उनकी कुछ कृतियाँ, जैसेकि कंठमणि (कविता) (1998), वाणी का क्षीरसागर (1998), अंधकार में अग्निशिखा (2008), रामायण महातीर्थम (2008), आगम की नाव (2013) और कुबेरनाथ राय की दृष्टि में स्वामी सहजानन्द (2014) उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुईं। उनकी पुस्तकों पर शोध करने वाले बीस शोध–छात्रों को पीएचडी की उपाधि दी गई है।

कुबेरनाथ राय मंच पर माला डालकर स्वागत करवाने, सार्वजनिक बैठकों और विशेष रूप से जनता के बीच बोलने से बचने के लिए जाने जाते हैं। वे कहा करते थे कि इन सब बातों से उनका सर्जनात्मक लेखन प्रभावित होता है। उन्होंने निषाद और किरात जैसे कुछ शब्द और कुछ शब्द भारत के दक्षिणी राज्यों में बोले जाने वाली भाषाओं से लेकर संस्कृत और हिन्दी शब्दावली में सम्मिलित किए हैं तथा ये सभी शब्द उनकी रचनाओं में भी पाए जाते हैं।

उनके लेखन में कठिन शब्दों के प्रयोग की आलोचनाएं भी हुईं, जिसकी प्रतिक्रियास्वरूप श्री राय ने कहा कि प्रत्येक रचनाकार एक शिक्षक है, उसका कर्तव्य है कि वह पाठक के ज्ञान के क्षितिज का विस्तार करे। उनका विश्वास था कि प्रत्येक सच्चा और जिज्ञासु पाठक अपरिचित शब्दों का अर्थ जानने का प्रयास करता है। अंग्रेजी भाषा के अपने ज्ञान के माध्यम से श्री राय विश्व की अनेक भाषाओं के साहित्य से परिचित हुए। अपनी मातृभाषा हिन्दी के अतिरिक्त, उन्हें उर्दू, अरबी और फारसी भाषा का भी ज्ञान था। बंगाली भाषा पर उनकी अच्छी पकड़ थी और वे यूनानी तथा रोमन भाषाओं तथा उनके साहित्य से भी भली–भांति परिचित थे। वे सभी भारतीय भाषाओं की जननी माने जाने वाली संस्कृत भाषा में भी प्रवीण थे। 5 जून, 1996 को उनका देहान्त हो गया।

डाक विभाग कुबेरनाथ राय पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभारः–

मूलपाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री के आधार पर

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका / विरूपण मोहर : श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500p
मुद्रित डाक-टिकटें	:	3.0 लाख
Stamps Printed	:	3.0 Lakh
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्यः ₹ 5.00